स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविदयालय, नांदेड
तथा भाषाविभाग हरिहर प्रतिष्ठान द्वारा संचलित

गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

के तत्वावधान में स्व. गोविंदलाल जोशी की स्मृति में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य के नवप्रवाह

मुख्य सम्पादक
डॉ. सुजाता चव्हाण
प्र. प्रधानाचार्य

सम्पादक
प्रा. आरेफ शेख
प्रा. नयन भादुले
प्रा. अनिता चौधरी

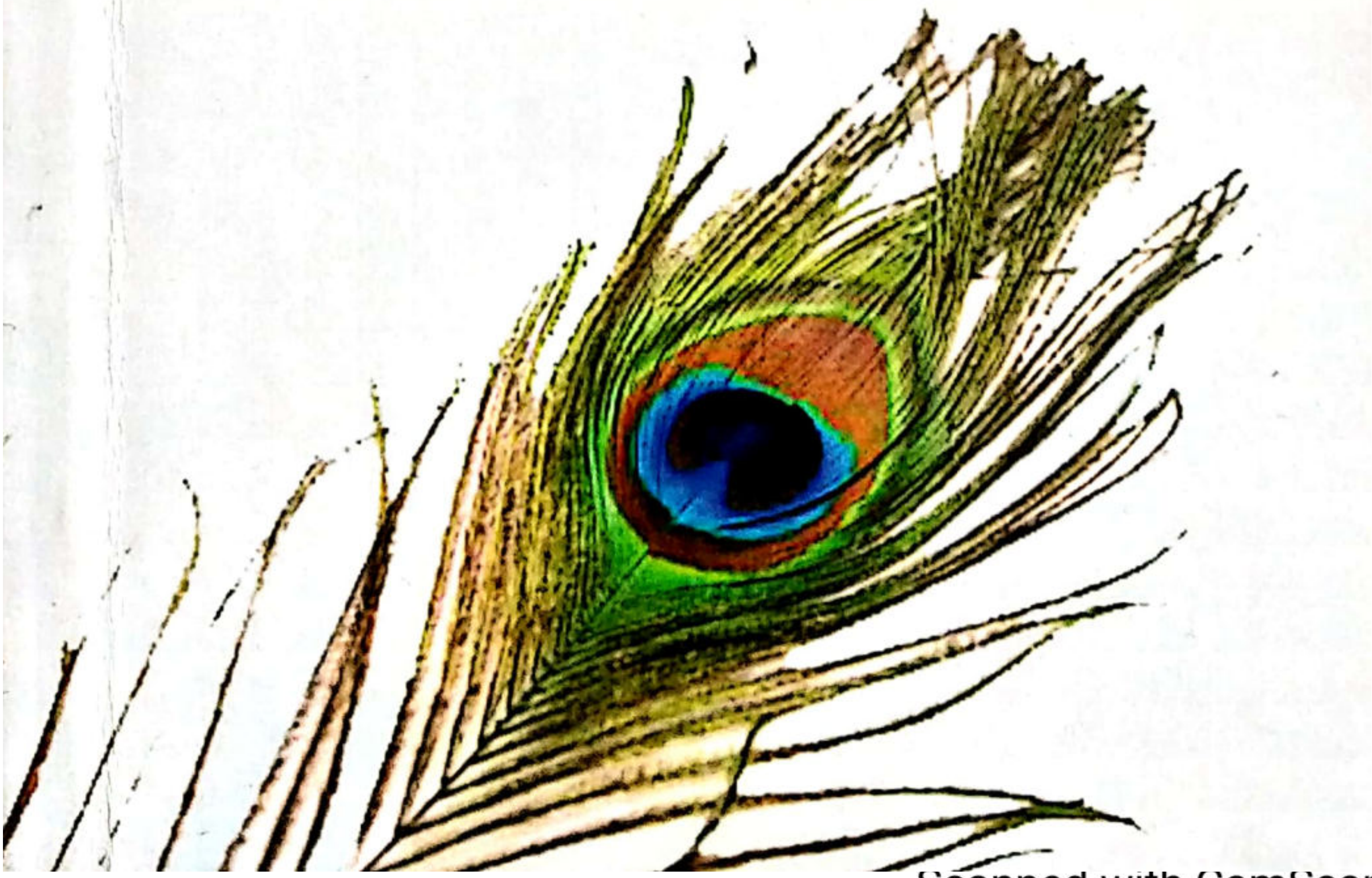

Scanned with CamScanner

साहित्य के नवप्रवाह

- **डॉ. सुजाता चव्हाण,** मुख्य सम्पादक

प्रा. आरेफ शेख, सम्पादक

प्रा. नयन भादुले, सम्पादक

प्रा. अनिता चौधरी, सम्पादक

- **प्रकाशक:**
विझक्राफ्ट पब्लिकेशन्स् ॲन्ड डिस्ट्रीब्युशन प्रा. लिमिटेड,
१२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर- ४१३००१
भ्रमणध्वनी - ०९६३७३३५५५१, ०७०२०८२८५५२
ई-मेल - wizcraftpublication@gmail.com

- **मुद्रक:**
पालवी प्रिंटर्स,
१२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर-४१३००१

- **ISBN: ९७८-९३-८६०१३-८३-५**

- **रुपये: ५००/-**

सर्व हक्क सुरक्षित (या पुस्तिकेतील प्रकाशित माहिती पूर्व परवानगी शिवाय कुठल्याही माध्यमाव्दारे पुर्न प्रकाशित करता येणार नाही.)

या पुस्तकातील प्रकाशित माहिती, मते, विधान, विचार इत्यादी लेखकांचे वैयक्तिक असून लेखकांने व्यक्त केलेली मते, माहिती, विधाने, विचार, इत्यादी बाबत प्रकाशक, मुद्रक आदी सहमत असतीलच असे नाही.

Scanned with CamScanner

44. दलित विमर्श : आंबेडकरवादी विचाराधारा का प्रभाव — 224
प्रा.डॉ.चोले सचिन रमेशराव

45. सुरजपाल चौहान के कविता संग्रहों में दलित संवेदना — 230
प्रा. संजय गणपती भालेराव

46. हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श — 237
संतोष मोतीराम आदमाने

47. जयप्रकाश कर्दम के काव्य में दलित विमर्श — 242
('बस्तियों से बाहर' के विशेष सन्दर्भ में)
संतोष नागरे

48. आदिवासीयों के मन की टीस — 248
शंकर दत्तात्रय कोळगिरे

49. "हिंदी कथा साहित्य में किसान विमर्श" — 252
डॉ. सूर्यकांत शिंदे

50. नारी तुम केवल सबला हो कहानी में स्त्री विमर्श छ — 258
डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड

51. जंगल जहाँ शुरु होता है में आदिवासी विमर्श — 263
डॉ. सुलभा वाघंबर शेंडगे

52. हिंदी दलित कविता में अभिव्यक्त मूल्य — 267
प्रा. डॉ. प्रकाश सदाशिव सूर्यवंशी

53. महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री विमर्श — 272
श्री तुकाराम वसराम आडे

54. दलित विमर्श — 276
डॉ. विलास कांबळे

55. जातीय मानदंड बनाम दलित साहित्य......... — 281
डा.विलास अंबादास साळुंके

56. श्री गुरू नानक जी (सर्वधर्मीय वक्ता) — 285
डॉ.के. श्याम सुन्दर

57. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में किसान — 289
राजकुमार अर्जुनराव बिरादार

58. साहित्य और स्त्री विमर्श — 292
गुरव देवकांत

47

जयप्रकाश कर्दम के काव्य में दलित विमर्श
('बस्तियों से बाहर' के विशेष सन्दर्भ में)

संतोष नागरे, सहा.प्रा.-हिन्दी विभाग, र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई, जि.बीड

दलित साहित्यान्दोलन के बीज मराठी भाषा तथा साहित्य में प्राप्त होते हैं। दलित साहित्य आन्दोलन का सूत्रपात नामदेव ढ़साल द्वारा स्थापित 'दलित पँथर' से माना जा सकता है। दलित साहित्य वर्ण व्यवस्था तथा जातिव्यवस्था द्वारा सदियों से पीड़ित समूह की वेदना को वाणी देता है। नकार, विरोध और विद्रोह दलित साहित्य का स्थायी भाव है। डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर जी के सामाजिक पुर्नरचना तथा सामाजिक न्याय सम्बन्धी विचार दलित साहित्य की रीढ़ है। मानवाधिकार के तहत दलित साहित्य जातिव्यवस्था से मुक्ति हेतु संघर्ष करता है। स्वातंत्र्य, समता, न्याय तथा बंधुत्व की भावना दलित साहित्य में चरमोच्च रुप में पायी जाती है। डॉ.जयप्रकाश कर्दम दलित साहित्य के संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "अपने समय की समस्याओं और सवालों से जूझना और मानव विरोधी मूल्यों, मान्यताओं से टकराना और उनसे मुक्ति की प्रेरणा देना साहित्य की मूल अपेक्षा है। साहित्य की परंपरा ने जहाँ इन अपेक्षाओं को अनदेखा कर या अनावश्यक मान निरंतर अमानवीय मूल्यों, मान्यताओं और परम्पराओं का पोषण और संवर्धन किया है, वहीं दलित साहित्य ने इस अपेक्षा को अपना मूल चरित्र बनाया है। यही उसकी एक बड़ी विशेषता भी है। दलित साहित्य को निरंतर मानव हित के प्रश्नों से जूझते हुए देखा जा सकता है।"[1]

आधुनिक हिंदी दलित कविता का प्रारंभ हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' से माना जाता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, सुखबीर सिंह, मनोज सोनकर, कंवल भारती, सुशीला टाकभौरे, मोहनदास नैमिशराय, रजनी तिलक, पूनम तुषामड़, कल्पना लालजी, असंघ घोष, जयप्रकाश कर्दम आदि कवियों ने अपनी कविताओं में दलितों की वेदना और चेतना को विस्तार दिया है। दलित कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज की जड़ता को झकझोर कर सामाजिक परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाया है। डॉ.जयप्रकाश कर्दम इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "दलित कविता ने समाज की जड़ चेतना के तालाब में कंकड़ की तरह गिरकर उसको तरंगित करने का

Scanned with CamScanner

काम किया है। यही वह बिंदु है जिसे किसी भी समाज की चेतना में बदलाव का प्रस्थान बिंदु कहा जा सकता है। इसलिए दलित कविता समकालीन कविता में सार्थक और आवश्यक हस्तक्षेप है। दलित कविता के बिना समकालीन कविता पर कोई भी बात अधूरी होगी।"[२] डॉ. जयप्रकाश कर्दम दलित सरोकारों के साथ अभिन्न रुप से जुड़े हुए कवि हैं। आपने 'गूँगा नहीं था मैं (१९९७), 'तिनका-तिनका आग' (२००४), 'बस्तियों से बाहर' काव्य-संग्रह के साथ 'राहुल' (२०११) शीर्षक से खंडकाव्य का सृजन भी किया है। जयप्रकाश कर्दम जी का तृतीय काव्य-संग्रह 'बस्तियों से बाहर' सन २०१३ में अमन प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुआ। 'बस्तियों से बाहर' यह शीर्षक व्यंग्यात्मक है, जो दलितों के दर्द भरे जीवन को बयान करता है। प्रस्तुत रचना में छियालिस कविताएँ हैं, जिसमें कवि की जीवन-यात्रा के विभिन्न पड़ावों को अभिव्यक्ति मिली है। डॉ.जयप्रकाश कर्दम भूमिका में ठीक ही कहते हैं,- "जीवन के जिन रास्तों, पड़ावों से मैं गुजरता गया और इस यात्रा में जो कुछ देखता, महसूसता और अनुभव करता गया ये कविताएँ उसी अनुभूति की शाब्दिक अभिव्यक्ति है।"[३]

दलितों के लिए अस्पृश्य, अछूत, हरिजन, पिछड़े हिन्दू आदि शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है। दलितों के लिए प्रयुक्त होनेवाले हरिजन शब्द पर कवि को आपत्ति है। यदि हम सभी एक ही परमपिता ईश्वर की संतान हैं, तो हम सभी हरिजन क्यों नहीं? 'हरिजन' शब्द से जाति की बू आती है। अपने आप को हरिजन तथा ईश्वर को अपना पिता मानने से इंकार करते हुए डॉ.जयप्रकाश कर्दम कहते हैं,-

> "परमपिता है यदि हरि / यानी ईश्वर
> और सब है उसकी संतान तो / क्यों नहीं है सब हरिजन
> क्यों कहा जाता है हरिजन मुझको ही / मैंने ईश्वर को नहीं देखा
> न उसे जानता हूँ / न मानता हूँ।
> मैं जानता हूँ अपने पिता को / और अपनी माँ को
> पैदा किया था जिसने मुझे / अपनी कोख से
> अपने माता-पिता का जना / मैं उनकी संतान हूँ
> ईश्वर मेरा पिता नहीं / मैं हरिजन नहीं।"[४]

दलितों को हरिजन कहने के पीछे सवर्णों की कूटनीति रही है। हरिजन कहने से दलित समूह हिन्दू धर्म के साथ चिपका रहेगा। जिससे उसका बेरोक-टोक शोषण किया जा सकेगा। दुनिया में भारत ही एकमेव ऐसा देश है जहाँ वर्णव्यवस्था तथा जातिव्यवस्था पायी जाती है। भारतीय भूमि पर ३३ करोड़ भगवान वास करते हैं, अतः इसे देवभूमि

Scanned with CamScanner

वैश्वीकरण के इस दौर में जातिव्यवस्था क्षीण होने की बजाए और अधिक बलवती होती जा रही है। आर्थिक - सामाजिक विषमता बढ़ने के परिणाम - स्वरुप ही देश के हर कोने से आरक्षण के लिए आवाज उठायी जा रही है। समाज आरक्षण के नाम पर दो वर्गों में बंट चुका है। जहाँ एक ओर आधुनिक मनुष्य वैज्ञानिक प्रगति के सहारे चाँद और मंगल ग्रह पर बस्ती बसाने जा रहा है, वहीं दूसरी ओर सदियों से गाँव के बाहर किया गया समाज आज भी वहीं- का- वहीं है। डॉ.जयप्रकाश कर्दम इस संदर्भ में कहते हैं,- " 'बस्तियों से बाहर' यदि आज के समय का ज्वलंत और जरुरी प्रश्न है और इसे मानव- प्रगति के तमाम आधुनिक मॉडलों पर एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी के रुप में भी देखा जा सकता है।"[९] बस्तियों से बाहर रहनेवाले दलितों की व्यथा-कथा को बयान करते हुए डॉ.जयप्रकाश कर्दम कहते हैं,-

"बन्द कर मेरी रौशनी के सुराख / वे उजालों की सैर करते हैं।
वसुधैवों को एक कुटुम्ब बतानेवाले / जाति, वर्णों में बंटे फिरते हैं।
खूब आता है सताने का सलीका उनको / न्याय के नाम पर वो दंड दिया करते हैं।
किसने, किसको क्या दिया, लिया, छीना / बात उठती है तो परेशान हुआ करते हैं।
सुना है चँद और मंगल पर बसेगी बस्ती / कहां होंगे जो बस्तियों से बाहर रहते हैं।"[१०]

डॉ.जयप्रकाश कर्दम नयी पीढ़ी को सपने देखने, चुनने और बुनने के लिए प्रवृत्त करते हैं। जीवन में इंजीनियर, डॉक्टर, अफसर, प्रोफेसर, वकील, वैज्ञानिक, न्यायधीश, दार्शनिक, पायलेट, खिलाड़ी, एक्टिविस्ट, अभिनेता, मंत्री, प्रधानमंत्री बनने पर मनुष्य ने अपनी आदमियत से कभी भी विमुख नहीं होना चाहिए। डॉ. जयप्रकाश कर्दम जीवन में आदमी बनने तथा आदमी को आदमी समझने की हिदायत देते हुए कहते हैं,-

"तुम्हें अधिकार है / सपनें चुनने और बुनने का
जैसा तुम चाहो / तुम चाहो जो करो, चाहे जो बनो
आदमी जरुर बनना / आदमी को आदमी समझना।"[११]

आदमी को आदमी समझने में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है। दलित समाज अगर मानवाधिकार के साथ जीना चाहता है तो उसे शिक्षित तथा संगठित होकर सदियों की शोषणकारी व्यवस्था के विरुध्द संघर्ष करना ही होगा। अपनी शोषणमुक्ति की तमन्ना को पूर्ण करने के लिए संघर्ष जरुरी है। संघर्ष के बिना दलितों के अंधकारमय जीवन में

Scanned with CamScanner

समता और सम्मान की भोर न उगेगी। डॉ.जयप्रकाश कर्दम कहते हैं,-

"पतित, तिरस्कृत रहेंगे शोषित नीच अछूत
चलता रहेगा जब तलक यहां जातियों का जोर।
उठो, झटक कर फेंक दो ये दासता की बेड़
समता और सम्मान की अगर चाहते हो भोर।"१२

सारांश :

जयप्रकाश कर्दम समकालीन हिंदी कविता के शीर्षस्थ रचनाकार हैं। दलित समाज जीवन का यथार्थ अंकन आपकी कविताओं में पाया जाता है। जयप्रकाश कर्दम जी ने 'बस्तियों से बाहर' के माध्यम से वर्णव्यवस्था तथा जातिव्यवस्था की शोषण चक्की में पिसते दलित समाज की पीड़ा को बयान करते हुए उनकी मुक्ति के लिए आवाज उठायी है। कवि जयप्रकाश कर्दम जी को उस सुबह का इंतजार है जब 'बस्तियों से बाहर' किये गये दलित समूह को सम्मान के साथ बस्ती के भीतर सम्मिलित किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ :

१. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दलित साहित्य एवं चिंतन : समकालीन परिदृश्य, फलैप
२. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दलित कविता : समकालीन परिदृश्य, पृ. १३
३. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, भूमिका पृ.०५
४. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. १९
५. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. १४
६. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. २३
७. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. ३०
८. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. ६२
९. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, भूमिका, पृ. ०५-०६
१०. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ.५६
११. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. ३९
१२. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. ६५.

Scanned with CamScanner